विषय – हिन्दी (कोर)

कक्षा – 12

शीर्षक – भक्तिन – महादेवी वर्मा

मॉडल प्रश्न एवं उत्तर

1. 'भक्तिन में आत्मसम्मान का भाव प्रबल था' – सिद्ध करें।

उत्तर – भक्तिन किसी भी परिस्थिति में नीचा देखना नहीं जानती थी। उसने अपने लोभी जेठों और जिठौती के साथ कमर कस कर लोहा लिया। जब उसके जिठौतों ने जबरदस्ती उसकी लड़की और घर–बार पर कब्जा कर लिया और पंचायत ने भी उसे नीचा दिखाया तब भी उसने हार नहीं मानी। वह कमाने के लिए शहर चली गई। शहर में महोदेवी के पास रहकर भी वह स्वाभिमान से रही। उसने न तो कभी अपने भेजन की निंदा सुनी, न आचारण की। उसने अपनी गलत–सलत सब बातों को सही सिद्ध करके दम लिया।

2. भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि का परिचय दें।

उत्तर – भक्तिन झूँसी गाँव के एक प्रसिद्ध शूरवीर की इकलौती बेटी थी। उसे विमाता की देख रेख में पलना पड़ा। अभी वह पाँच वर्ष की थी कि उसका विवाह हँडिया गाँव के एक ग्वाले के सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। उसके पिता उस पर अगाध स्नेह रखते थे। इस कारण उसकी विमाता ने उसे पिता की बीमारी का समाचार भी नहीं भेजा।

3. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी। भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर – भक्तिन बहुत समझदार थी, उसका वास्तविक नाम लक्ष्मी था परंतु उसके जीवन में सदा धन का अभाव रहा। जीवन में प्रायः सभी को अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है। जैसा नाम होता है वैसा उसे लाभ नहीं मिलता। इसलिए वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को नहीं बताती थी। लेखिका महादेवी वर्मा ने उसके कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण भक्तिन किया था, क्योंकि लक्ष्मी ने अपना नाम लक्ष्मी न पुकारने की प्रार्थना की थी।

4. 'भक्तिन अच्छी है' यह कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं, लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर – भक्तिन गाँव से शहर काम की तलाश में आई। उसने साफ हृदय से अपना पूरा परिचय लेखिका को दिया था। जिस वातावरण में वह पली–बड़ी थी वैसे ही संस्कार उसमें विद्मान थे। इसलिए लेखिका प्रयत्न करके भी उसे 'ओय' के स्थान पर 'जी' बोलना न सीखा सकी। वह मोटी–मोटी रोटियाँ और देहात के समान ही दाल–बात बनाती थी। कितनी ही दंतकथाओं को सुनाकर उसने लेखिका को कंठस्थ करवा दिया था। अपनी

Scanned with CamScanner

बात को सदा वह ऊपर रखती थी और कभी–कभी अपनी कमी के समर्थन में शास्त्र का तर्क देकर अपनी कमी छुपा देती थी। लेखिका के इधर–उधर पड़े रूपये पैसे भक्तिन भण्डार घर की मटकी में रख लेती थी। क्योंकि वह मानती थी कि वह उसका अपना घर है। इधर–उधर पड़े पैसे रखना क्या चोरी होती है ? वह लेखिका को प्रसन्न रखना अपना परम कर्त्तव्य मानती थी। जिस बात से लेखिका को क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर–उधर बताने को वह झूठ नहीं समझती थी। इसलिए लेखिका ने उसके देहाती स्वभाव एवं संस्कार को देखकर यह कहा कि वह साफ हृदय की सेवा भाव से पूर्ण थी, इसलिए वह अच्छी थी किंतु उसमें दुर्गुणों का भी अभाव नहीं था।

5. दो कन्या–रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र–महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत है ?

उत्तर – भक्तिन ने दो नहीं अपितु तीन कन्याओं को जन्म दिया था। यह धारणा बिल्कुल सही है कि समाज में जितने भी अत्याचार स्त्री पर होते है, उन सबमें स्त्री का ही हाथ होता है। स्त्री ही स्त्री का दुश्मन है। जब भक्तिन ने एक कन्या के बाद दो कन्याओं का जन्म दिया, तब सास और जिठानियों ने ओंठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। सास के भी तीन पुत्र थे और जिठानियों के पास भी पुत्र रत्न थे। असलिए भक्तिन को उनसे उपेक्षा सहनी पड़ी। उसे और उसकी बेटियों को सारा दिन काम करना पड़ता। भोजन भी लड़कों की अपेक्षा उपेक्षित और कम मिलता था। ध्यान देने योग्य है कि भक्तिन को घृणा व उपेक्षा नारी जाति से ही मिली, अपने पति से नहीं । पति के स्नेह में कोई कमी नहीं आयी। ऐसी घाटनाओं को देखकर प्रायः यह धारणा बनती है कि स्त्री ही स्त्री पर अत्याचार करती है। स्त्री यह भूल जाती है कि वह भी कभी कन्या थी। एसी ही समाज में अन्य घटनाएँ भी देखी जा सकती है।जैसे-दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या आदि। इन सब के पीछे स्त्री जाति का ही हाथ होता है।

6. लेखिका अपने और भक्तिन के बीच स्वामी सेवक का संबंध क्यों नहीं मानती ?

उत्तर – लेखिका अपने और भक्तिन के बीच सवामी–सेवक संबंध नहीं मानती क्योंकि भक्तिन को स्वामी की हैसियत से वह नौकरी से हटा नहीं सकती और भक्तिन भी जाने का आदेश पाकर केवल अवज्ञा से हँसकर टाल देती है। जिस प्रकार अपने घर में आने–जाने वाले अंधेरे–उजाले या खिलने–फलने वाले गुलाब आम को अपना सेवक नहीं कह सकते, उसी प्रकार भक्तिन का लेखिका के जीवन में एक स्वतंत्र अस्तित्व है।

Scanned with CamScanner